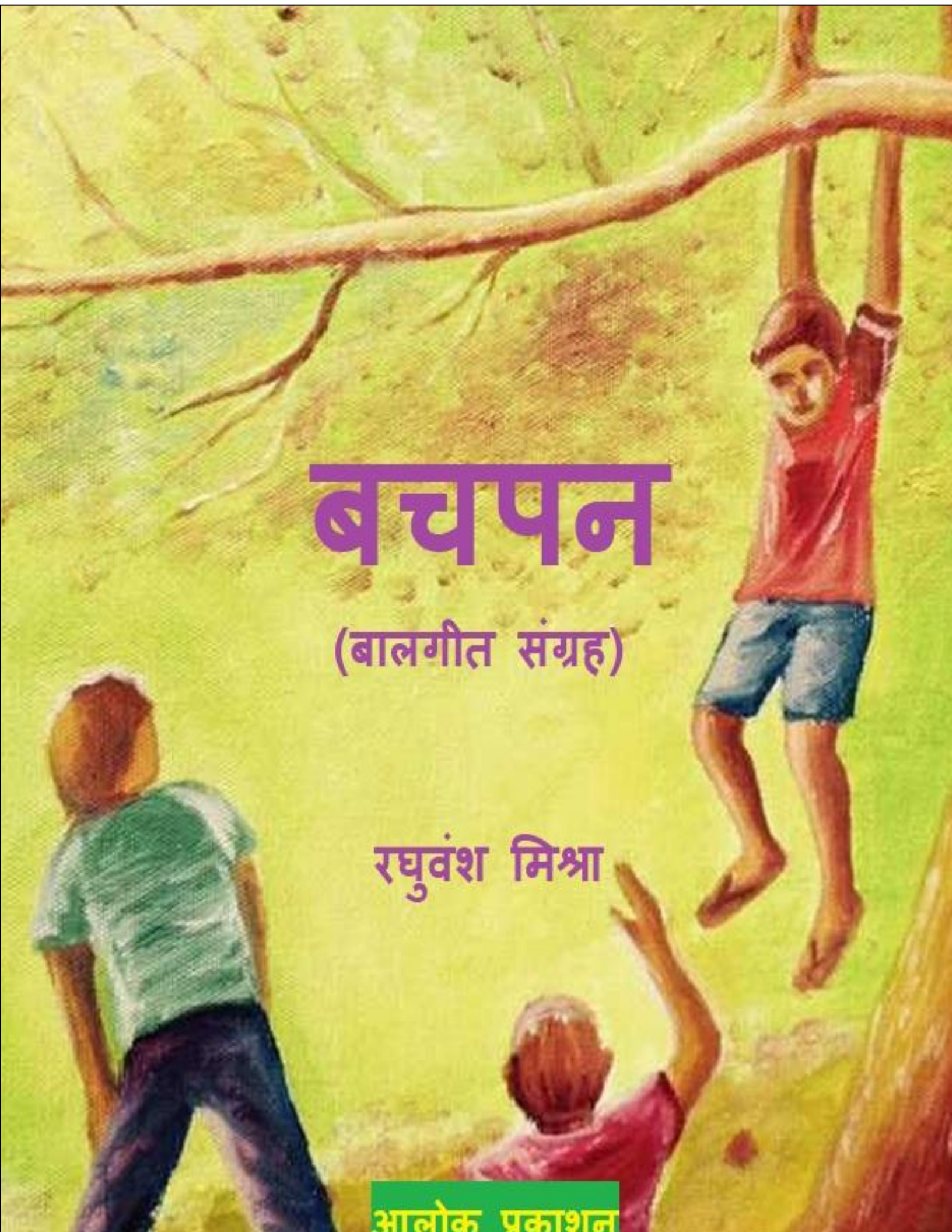

बचपन

(बालगीत संग्रह)

रघुवंश मिश्रा

आलोक प्रकाशन

बचपन

(बालगीत संग्रह)

बालगीत एवं चित्र – रघुवंश मिश्रा

C - रघुवंश मिश्रा - 2019

आलोक प्रकाशन

प्रिय शिक्षक साथियों,

हम सबके जीवन में बचपन का समय सबसे ज्यादा यादगार होता हैं। बिना किसी चिन्ता और तनाव के ईधर-उधर दिन भर घूमना-फिरना,मौज-मस्ती, हम उम्र के बच्चो के साथ लड़ना-झगड़ना और फिर तुरन्त दोस्त बना लेना,बच्चो के साथ पेड़ो पर चढ़कर झूलना या फिर खेल-खेलना,नदी और तालाबो में कूद-कूदकर नहाना किसे याद नही होगा। बचपन के इन यादो को आज तक मानस पटल पर अमिट रुप से बनाए रखने में प्राथमिक - कक्षाओ में पढ़े हुए गीत, कविता,कहानी और नाटको का महत्तवपूर्ण योगदान है। हमारे व्दारा पढ़े ये सारी चीजें न केवल विशय की दृष्टि से महत्तवपूर्ण थे अपितु हम सबकी अपने परिवेश और जीवन से जुड़ी अनुभूतियों को परिपक्व और एक सही आकार देने की दृष्टि से भी महत्तवपूर्ण रहा है। इसी अवधाराणा को ध्यान में रखकर मैने कुछ बालोपयोगी कविताओं का संग्रह अपने इस पुस्तक "बचपन" में किया है। इसको लिखते समय मैंने यह भी ध्यान रखा है कि यह हमारे प्राथमिक स्तर के अर्थात् कक्षा 1 से 8 तक के बच्चो के लिए उपयोगी हो।आशा और विश्वास है कि इस पुस्तक में संग्रहित कविताओं का उपयोग आप अपने-अपने षाला में कक्षा अध्यापन के समय अवष्य करेंगें। इससे बच्चो को जहां एक ओर कविताओं में विविधता मिलेगी वही दूसरी ओर उन्हें अपने परिवेश और जीवन को समझने में भी सहायता करेगी। इससे निश्चित ही बच्चों का जीवन ज्ञान और अनुभव की दृष्टि से समृध्द बनेगा और बड़े होने पर उनके पास सुनहरे यादों का एक अमिट संग्रह होगा। धन्यवाद!!

रघुवंश मिश्रा
उ.वर्ग शिक्षक
टेंगनमाड़ा

भिंडी और बरबटटी

एक समय की बात थी

भिंडी और बरबटटी साथ थी।

एक दूसरे से किये बड़ाई

आपस में हो गई लड़ाई॥

बरबटटी बोली भिंडी से

तू है मुझसे छोटी।।

फिर पलटकर भिंडी बोली

तो क्या हुं मैं तुमसे मोटी।

कुछ दूरी पर आलू दिखाए

बंधी दोनों की आस।

सरपट दोनों न्याय कराने

पहुंचे आलू के पास॥

बात सुनकर आलू बोला

तुम दोनो मुझको प्यारी।

मुझे सब लेना साथ

जब आये जिसकी बारी॥

दोनों ने झगड़े खतम किये

मान ली आलू की बात।

उस दिन से नहीं बनाये जाते

भिंडी और बरबटटी साथ॥

लाल टमाटर

लाल टमाटर लाट टमाटर

क्यूँ इतना इतराता है।

कभी अधिक कभी कम

कीमत अपना बतलाता है॥

फिर तुनककर बोला टमाटर

अगर मैं न साथ निभाता।

बिन तेल के बाती जैसे

सब सब्जी की हालत हो जाता॥

भूल गया किसके साथ

घर पर तू लाया जाता।

मिर्ची धनिया के कारण

तू इतना सम्मान पाता॥

सुनकर बात टमाटर

हुआ शर्म से पानी पानी।

सिर झुकाकर खड़ा रहा

और खतम हुआ कहानी॥

3

बाजार

गॉव से लगे नदी के पार।

लगता था एक छोटा सा बाजार॥

एक दिन मैं भी गया

मम्मी पापा के साथ।

बाजार पहुचने से पहले

शुरू हो गई बरसात॥

कॉपी पुस्तक साग-भाजी

सब कुछ हो गया गिला।

बरसते पानी में भींगकर

खूब आनंद मिला॥

दिन डूबने के पहले

झटपट घर को आये।

समोसा जलेबी और लडडू

साथ अपने लाये।

फिर जाने को मन चाहा

जब बरसों बाद।

बच्चों के साथ किया

उस दिन को याद॥

4

शेर और खरगोश

घूम-घूम कर जंगल में

जिसको भी पाता

छोटे बड़े सभी को

शेर तुरंत खा जाता।

अपनी समस्या सुलझाने

जानवरों ने बैठक बुलाया

जिसकी जैसी समझ

बचने का उपाय सुझाया।

इसी तरह चलता रहा तो

कोई बच न पायेंगे

अपनी अपनी बारी पर

शेर के पास जायेंगे।

रास्ते में खरगोश ने सोचा

करूं कुछ ऐसा काम

जिससे सदा के लये हो जाये

शेर का काम तमाम॥

पार पर बैठे खरगोश को

कुंए में दिखी अपनी परछाई

शेर को मारने के लिये

तुरंत ही तरकीब लगाई।

शेर के पास जाकर

कुंये तक बुलाकर लाया

पार पर खड़ा होकर

शेर को प्रतिबिंब दिखाया॥

दूसरा शेर समझकर

शेर कुंएं में छलांग लगाया।

सूझबूझ और कौशल से

सबको मरने से बचाया॥

5

मगर और बंदर

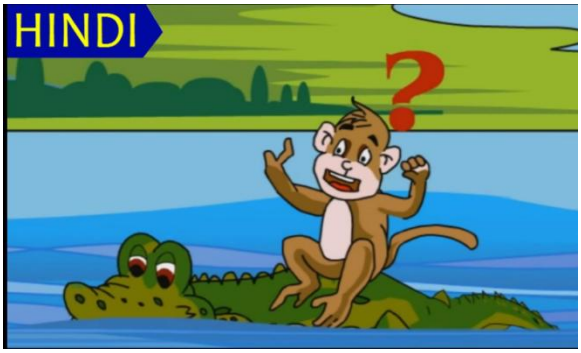

एक पेड़ पर दूसरा पानी के अंदर।

रहा करते थे मगर और बंदर॥

पार के पास मगर जब आता।

बंदर उसे मीठा जामुन खिलाता॥

दोस्त बनकर मस्ती करते।

बड़े मन से दोनों रहते॥

एक दिन मगर घर जब आया।

अपनी पत्नी को जामुन खिलाया॥

जामुन पत्नी को खूब भाई।

बंदर के कलेजा खाने मन ललचाई॥

पत्नि ने जिदद् की कलेजा खाने की।

मगर ने कोशिश की उसे मनाने की॥

बात मान मगर पहुंचा बंदर के पास।

बोल मित्र घर चलो आज है वहां खास।

बीच रास्ते मगर का इरादा जानकर।

बंदर बोला आया हूं पेड़ पर कलेजा रखकर॥

कलेजा लेने दोनों पहुंचे पेड़ के पास।

नहीं मिलने से मगर हो गया उदास॥

बिन कलेजा मगर जब आया।

घर में पत्नि को मृत पाया॥

हुआ यह हाल पत्नि के बात में आने से।

हो नहीं सकता अब कुछ पछताने से॥

6

<u>फसल</u>

वर्षा ऋतु की फसलें

खरीफ फसल कहलाता।

किसान अपनी खेतों में

अरहरए तिलए धान उगाता॥

शीत ऋतु की फसलों में

गेहूंए चना मटर का नाम आता।

कम पानी में होने वाली

ये रबी फसल कहलाता॥

ग्रीष्म ऋतु की फसलें

जायद फसलें कहलाता।

ककड़ी तरबूज खरबूज बेंच

किसान खूब पैसे कमाता।

7

कुत्ता और बिल्ली

कुत्ता बोला बिल्ली मौसी

क्या तुम मुझसे खेलोगे।

दूर हटकर बिल्ली बोली

नहीं बाबा तुम मुझे मार डालोगे॥

सुन बात बिल्ली की

कुत्ता हो गया उदास।

हॉथ जोड़कर कुत्ता बोला

नहीं मारूंगा करो विश्वास॥

खेलने लगी बिल्ली

कुत्ते की बात में आकर।

मारा झपटटा कुत्ते ने जब

बिल्ली भागी जान बचाकर॥

8

चिड़िया

चीं-चीं करती चिड़िया आई।

मम्मी ने दाना खिलाई॥

मम्मी पूछी दाना देकर।

क्या संदेश आई हो लेकर॥

बोली चिड़िया खाते-खाते।

दूर देश को अब हम जाते॥

रोने लगी मम्मी चिड़िया की बात सुनकर।

मम्मी के पास आई चिड़िया उड़कर॥

नाची गाई मम्मी के मन बहलाने को।

वादा करके चली गई अगले बरस आने को॥

9

परियो का देश

मैं भी पहुंची एक दिन

रानी परी के देश में।

बहुत सी परियां थी वहां

मेरे जैसे वेश में॥

मुझे देखकर रानी बोली

स्वागत है तुम्हारा।

मधुर सुगंध से भरा

यह देश है हमारा॥

सुंदर-सुदर फूलों की

थी वहाँ उपवन।

खेली-कूदी नाची-गाई

जब तक चाहा मन॥

धीरे-धीरे शाम हुई

लगा अंधेरा छाने।

भूल परियों की देश

लगी मम्मी की याद आने॥

सभी परियों ने मिलकर

मुझको दी विदाई।

हंसते-गाते वहां से

अपना देश लौट आई॥

10

<u>बंदर मामा</u>

बंदर मामा बड़ा सयाना।

था एक ऑख से काना॥

अपने रूप पर वह इतराता।

घूम-घूम कर सबको दिखाता॥

दूसरे बंदर ने एक दर्पण लाया।

बंदर मामा को उसका रूप दिखाया॥

अपना रूप देखकर बंदर डरा।

सब इतराना रह गया धरा का धरा॥

सबसे बोला कर दो मुझे माफ।

मेरा मन अब हो गया साफ॥

मिलकर रहे भूल माफी की बात।

खुशी-खुशी दिन बिताये सबके साथ॥

काला कौआं

काला कौआं रोज आता।

कॉव कॉव कर मुझे चिढ़ाता॥

आंगन में जब मैं कुछ खाता।

झपटटा मार हाथ से ले जाता॥

जोरण्जोर से जब मैं रोने लगता।

पास आकर वह कॉव कॉव करता॥

मुझे चुप कराने मम्मी आती।

डंडा दिखाकर कौआं को भगाती॥

देख डंडा कौआं भाग जाता।

मम्मी के जाते फिर तुरंत आता॥

दोस्त बन गये कुछ समय के बाद।

एक-दूसरे के डर से हो गये आजाद॥

कोयल

मधुर स्वर घुल गया

बसंत ऋतु के आने पर।

निक्कू निक्की झूम उठे

कोयल के गीत गाने पर॥

कोयल की गीत

लगती है बड़ी प्यारी।

आम्र कुंज में छिपकर

गाये दिन सारी॥

खुलती है नींद जब

बसंत के भोर में।

लगे प्रकृति सराबोर है

कोयल के कूक की शोर में॥

मन को मोह लेती है

कोयल की प्यारी आवाज।

सबसे न्यारी होती है

प्यारी कोयल की अंदाज॥

ठहरे हुये जीवन में

हलचल ला देती है।

बच्चेए जवानए वृध्द

सभी का मन हर लेती है॥

खरगोश

घने जंगलों में

एक खरगोश रहता था।

दिन भर ईधर-उधर

घूमा-फिरा करता था॥

दोपहर में सोये सोये

उसने सुना आवाज।

आसमान गिर रहा है

ऐसा लगा लिया अंदाज॥

तुरंत उठ वहां से

भागा वह सरपट।

दूसरे जानवर भी भागे

खरगोश के पीछे झपटपट॥

आखिरी में जंगल का राजा

शेर सामने आया।

पूछा गिर रहा है आसमान

यह सबको किसने बतलाया।।

सभी जानवर बारी-बारी

एक दूसरे का नाम बतलाये।

शेर बोला सभी से

चलो उस जगह पर जायें॥

सभी पहुंचे उस जगह

आवाज सुनाई दिया था जहां।

एक बड़ा नारियल फल

गिरकर पड़ा था वहां॥

खरगोश की मूर्खता

सभी को समझ में आया।

एक-दूसरे से कहे

अकारण ही हमें दौड़ाया॥

देख सभी की गुस्सा

खरगोश थरथर कांपने लगा।

बिना कुछ बोले

झटपट झाड़ियों की ओर भगा॥

ग्रहण

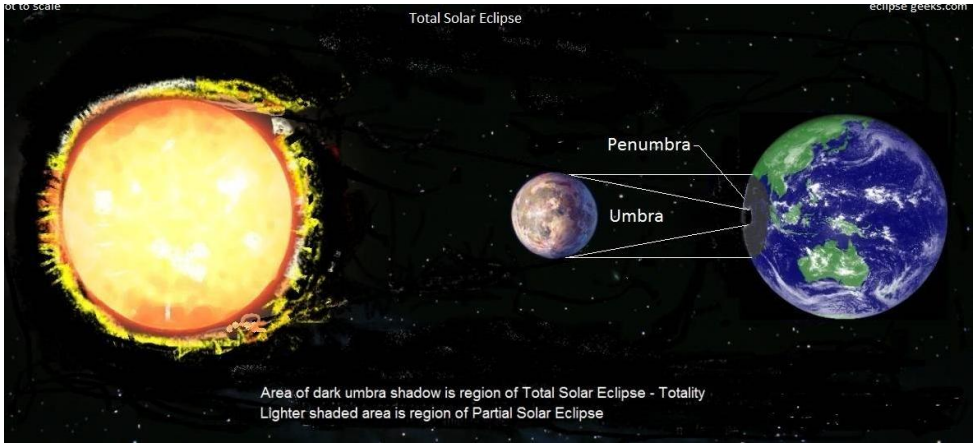

धार्मिक कथा के अनुसार

ग्रहण की घटना होता है तब।

राहू केतू नामक राक्षस

सूर्य-चन्द्र को मुंह में रखता है जब॥

धीरे-धीरे ग्रहण का

वैज्ञानिक कारण सामने आया।

तथ्यों से सिध्द कर

इसे खगोलीय घटना बतलाया॥

घूमते-घूमते जब पृथ्वी

सूर्य और चन्द्रमा के बीच आती है।

तब सूर्य की किरणें

चन्द्रमा तक नहीं पहुंच पाती है॥

चन्द्रमा भी पृथ्वी की

चारो ओर चक्कर लगाती है।

घूमते-घूमते चन्द्रमा

सूर्य और पृथ्वी के बीच आती है।।

सूर्य की किरणें नहीं पहुंचती

पृथ्वी पर चन्द्रमा के कारण।

इस खगोलीय घटना को

कहते हैं हम सूर्य ग्रहण॥

सूर्य की किरणें नहीं पहुंचती

पृथ्वी के अवरोध के कारण।

तब इसे कहते हैं

पृथ्वीवासी चन्द्रग्रहण॥

यह घटना घटती है

अमावस्या और पूर्णिमा के दिन।

खगोल वैज्ञानिकों ने सिध्द किया

ग्रहण होता है राहू केतु के बिन॥

15

पंडितजी

हरिपुर गांव में

एक पंडित रहता था।

पोथी-पत्रा पढ़कर

गुजर-बसर करता था।।

पूजा-पाठ कर

बहुत नाम कमाया।

भगवान की कथा कहने

दूसरे गांव से बुलावा आया।

नदी पार कर

कथा कहने जाना था।

दिन ढ़लते-ढ़लते

अपना गांव वापस आना था।

कथा पूरी होते-होते

शाम ढलने लगी।

काली बादल देख

मन में चिंता जगी॥

चलते-चलते पंडितजी ने

मन में किया विचार।

बाढ़ आने से पहले

नदी करना होगा पार॥

आते-आते नदी तक

बादल लगा बरसने।

तेज आंधियों के साथ

बिजली भी लगा चमकने॥

तट पर खड़े पंडितजी को

नहीं सूझा कोई राह।

अचानक उसे दिखाई दिया

नाव पर बैठा एक मल्लाह॥

नाव पर जाकर बैठ गया

पंडित जी झटपट।

पानी से लबालब था

नदी के दोनों तट॥

नाव पर बैठे-बैठे

पंडित जी को कुछ सूझा।

कितने पढ़े लिखे हो

मल्लाह से यह पूछा॥

मल्लाह ने जब सुनाया

अपना वृतांत सारा।

तब पंडितजी गर्व से बोले

तिहाई जीवन व्यर्थ गया तुम्हारा॥

लहरों से टकराकरए

नाव खाने लगी हिचकौले।

नदी में गिरे पंडितजी को

मल्लाह खींच लाया हौले-हौले॥

जान संकट में देख

पंडितजी हुये दुखी और उदास।

शांत कराकर मल्लाह

बोले पंडितजी के पास॥

हर जगह किताबी ज्ञान

काम नहीं आता।

मेरा तो तिहाई जीवन

तुम्हारा पूरा व्यर्थ हो जाता॥

हाथी की मूँछ

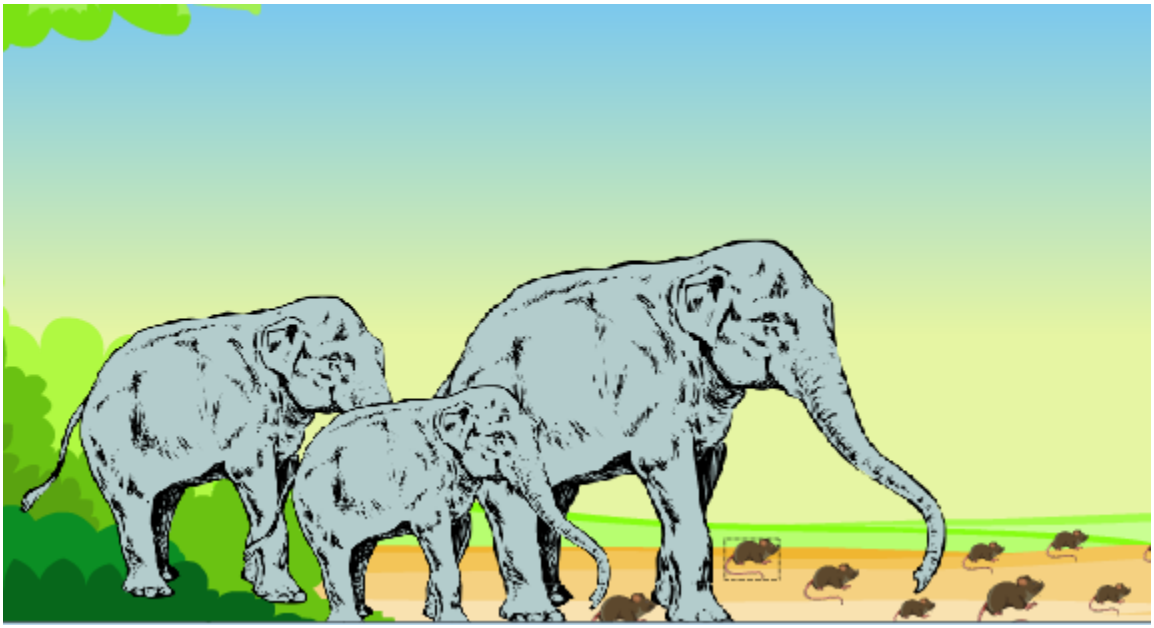

हाथी का बच्चा बोला

अपनी मॉ से एक दिन।

नहीं दिखता अच्छा

मैं मूँछों के बिन।।

मॉ हंसी बोली बेटा

हॉथियों के नहीं होते मूँछ।

इसके बदले हमारे

होते हैं सूंड और पूंछ॥

सुनकर माँ की बात

बच्चा जोर-जोर से लगा रोने।

बच्चे को चुप कराने

मॉ निकली मूँछ खोजने॥

मॉ की नजर

चूहे पर पड़ी।

जिसकी थी

मूँछे बड़ी-बड़ी॥

माँ ने चूहे को

सारी बात बतलाई।

चूहे को तब

उस पर दया आई॥

चूहा बोला माँ से

मेरा मूँछ ले जाओ।

सूँड के उपर

जाकर इसे लगाओ॥

मूँछ लेकर आई माँ

अपने बच्चे के पास।

मूँछ लगाकर बोली

बन गये अब तुम खास॥

मूँछ लगाकर बच्चा

हुआ बहुत प्रसन्न।

बाहर निकलकर खेलते-कूदते

देख माँ हुई मगन॥

17

बंदर की शादी

धूमधाम से मॉ-बाप ने

बंदर का किया विवाह।

दूल्हा बना देख

सब बंदर बोले वाह वाह॥

दुल्हन लाने बंदरों ने

निकाली जब बारात।

नाचते-गाते चले वहाँ से

करते मौज-मस्ती की बात॥

दुल्हा को काना देखकर

दुल्हन ने किया इन्कार।

बाराती नाराज हुये

धुम धड़ाका हुआ बेकार॥

शादी टूट जाने पर

रामू बंदर हुआ उदास।

कान में कुछ बोला

जाकर दोस्तों के पास॥

दुल्हन की माँ बाप से

रखने गया जब मांग।

बोझ से डाली टूटा

और टूटा सबकी टांग॥

18

जंगल में मोर नाचा

काले-काले बादल आया

देख मोर का मन ललचाया।

जब शुरू हुई हल्की बरसात

नाचने लगा अपने पंख के साथ।।

रंग-बिरंगे पंख फैलाये

जंगल की शोभा बढ़ाये।

बीच-बीच में तान सुनाए

दोस्तों को पास बुलाये॥

सभी दोस्त आये साथ

तभी बंद हो गई बरसात।

नाचना-गाना बंद कर

सब गये अपने अपने घर।

फिर काला बादल आयेगा

मोर अपना पंख फैलायेगा॥

19

पतंग

लहराते बलखाते

देखो पतंग की चाल।

हवा की है मर्जी

या फिर हांथों का कमाल॥

कभी उपर कभी बीच में

कभी गिरे नीचे धड़ाम।

उपर रहे तो हवा

नीचे गिरे तो मेरा नाम॥

उड़ते पतंगों के समूह में

कर सकते नहीं पहचान।

हवा की है या हॉथ की

यह बतलाना नहीं आसान॥

जहां भी चला जाये

पतंग उड़ाना मत छोड़ो।

दिक सूचक धागा से

सदा अपना रिश्ता जोड़ो॥

उड़ता रहेगा पतंग

लहराकर और बलखाकर।

छोड़ न देना धागा तुम

तेज हवाओं से घबराकर॥

20

पहला दिन

पहुंचे स्कूल पहले दिन।

गिनती गिने एक दो तीन॥

सुने फिर बंदर की कहानी।

शुरू हो गया गिरना पानी॥

कए खए गए घ भी पढ़े।

आपस में एक दूसरे से लड़े॥

तभी गुरूजी अंदर आये।

आकर सबको समझाये॥

लड़ना है बुरी बात।

रहो मिल जुलकर साथ॥

सभी बच्चों ने समझ लिया।

आपस में लड़ना छोड़ दिया॥

बजी घंटी बस्ता उठाये।

अपने अपने घर लौट आये॥

मैं रोज स्कूल जाउंगा

पढ़ लिखकर नाम कमाउंगा॥

21

दोस्त बनाँए

जब हम अपने स्कूल जायें।

रोज नये मित्र बनायें॥

कुछ उनकी कुछ अपनी सुनायें।

मित्रता का भाव बढ़ायें॥

मत भेद कभी बढ़ न पाये।

कटुता आपस में सुलझायें॥

मिले जो मिल जुलकर खायें।

आपस की दूरियां मिटायें॥

नफरत के बदले प्रेम दिखायें।

एक दूसरे को करीब लाये॥

सहयोग की भावना बढ़ायें।

दीनण्दुखी को गले लगायें॥

जीवन में सच्चा सुख आये।

चलो रोज नये मित्र बनायें॥

22

रोटी

अम्मा रोज रोटी बनाती।

बड़े प्रेम से हमें खिलाती॥

एक मांगों देती तीन चार।

भरकर अपना प्रेम दुलार॥

मैं और दीदी साथ खाते।

रोटी के साथ प्यार पाते॥

कभी जब दोनों लड़ जाते।

बड़े प्रेम से हमें समझाते॥

खाने के समय जो झगड़ता।

माँ की प्रेम को वह तरसता॥

फिर कभी न हम लड़े।

धीरे धीरे हो गये बड़े॥

23

कुम्हड़ा और लौकी

कुम्हड़ा बोली लौकी से

मैं हूं तुमसे सुन्दर ज्यादा।

हंसते हंसते लौकी बोला

तुम्हारी उंचाई मुझसे आधा॥

सुन लौकी की बात

गया कुम्हड़ा चिढ़।

लुढ़कते हुये आया पास

लौकी से गया भिड़॥

कभी कुम्हड़ा उपर कभी लौकी

होता रहा दोनों में कुश्ती॥

लगातार लड़ने से

दोनों में आई सुस्ती॥

सोंचने लगे दोनोए

क्यूं न कुछ आराम करें।

आकर तभी खरीददार

दोनों को अपने थैले में भरे॥

लाककर घर दोनों की

सब्जी बनाये एक साथ।

चटकारे लेकर खाये सभी

करतेण्करते बात॥

हाथी गया बाजार

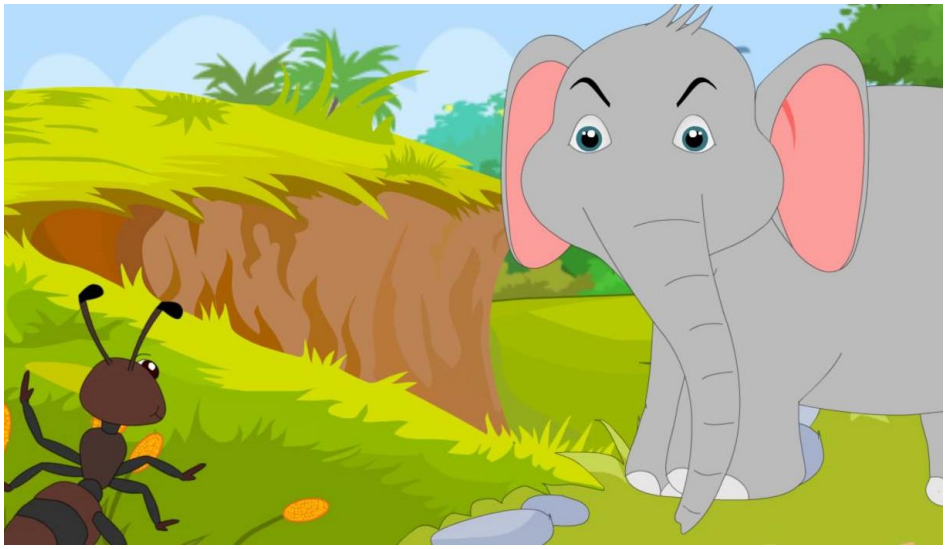

आदत से लाचार।

हाथी गया बाजार॥

रास्ते में मिली चींटी।

बात में समय बीती॥

पहुंचा जब बाजार हॉथी।

वहॉ नहीं था कोई साथी॥

देखकर हॉथी हुआ उदास।

बोला दुकानदार के पास॥

मुझे चाहिये दो केला।

दुकानदार ने दिखाया खाली ठेला॥

लौटा हॉथी खाली हाथ।

नहीं था कोई उसके साथ॥

रास्ते में विचार किया।

अपना आदत सुधार लिया॥

24

कछुआ और खरगोश

कछुआ और खरगोश

देखने गये मेला।

रास्ते भर था

जानवरों का रेलम रेला॥

खरगोश का तेज

कछुआ का धीमा चाल था।

तेज चलने से

खरगोश का बुरा हाल था॥

तेज दौड़ लगाकर

खरगोश ने किया विचार।

किसी पेड़ की छाया में

कछुआ का करते इंतजार॥

पेड़ की ठंडी छाया में

खरगोश को नींद आया।

आंख खुली तब

कछुआ को नहीं पाया।

धीरे धीरे चलकर

कछुआ पहुंच गया वहां।

कछुआ और खरगोश को

जाना था जहां॥

मेले में पहुंचने पर

कछुआ दिया दिखाई।

पास जाकर खरगोश ने

शुरू किया लड़ाई।

शांत कराकर कछुआ बोला

बीच में नही आराम।

सुख की चिंता छोड़

पूरा करो पहले काम।

कछुआ की यह बात

खरगोश को समझ आया।

छोड़ लड़ाई झगड़ा

कछुआ को गले लगाया।

घूमे फिरे मौज मस्ती

किये दोनों दिन भर।

दिन ढलने के पहले

लौटे अपने अपने घर॥

25

लोरी

आजा-आजा निंदिया रानी

दुंगी खीर मिठाई।

गोद में लेकर लल्ले को

माँ ने लोरी सुनाई॥

थका हुआ है मेरा लल्ला

जी भर सोना चाहे वह।

आज की रात निंदिया रानी

तू मेरे लल्ले के संग रह॥

भोर होने पर तू

अपने घर निकल जाना।

कल फिर जब रात होगी

मेरे लल्ले के पास आना॥

धीरे-धीरे आई निंदिया रानी

सुनकर माँ की पुकार।

बैठ लल्ला के पास

करने लगी खूब प्यार॥

ठंडी हवा के झोकों के साथ

आई थी निंदिया रानी।

जब लल्ला सो गया

माँ ने बंद की लोरी गानी॥

मेरे भी पंख होते

मेरे भी पंख होते

उड़ता दूर गगन में।

ढूंढण्ढूंढकर खुशियाँ लाता

भरने इस चमन में॥

न होता दुख दर्द

न नैराश्य जीवन में।

उमंग और उत्साह

भरा हो सबके मन में॥

समरसताए सदभाव

हो हर कण में।

मिलण्जुलकर रहे यहाँ

न जाने प्रलय हो किस क्षण में॥

प्रतिकुलताओं में डटे रहे

प्रतिबध्दता हो हर जन में।

उपर नीचे नीचे उपर

शाश्वत नियम है इस रण में॥

मानवता की ओर उन्मुख

मोह माया हो न तन में।

मेरे भी पंख होते

उड़ता दूर गगन में॥

27

प्यारा कुत्ता

भौं-भौं कर पूँछ हिलाता।

बचा-खुचा वह खाना खाता॥

आवाज से झट लेता जान।

अपने पराये की उसे पहचान॥

अनजाने को देख भौंकता।

अंदर आने से रोकता॥

फिर भी अगर कोई अंदर आता।

भौंक भौंक कर उसे भगाता॥

दिन में वह सोते रहता।

रात में रखवाली करता॥

मम्मी-पापा का वह दुलारा।

कुत्ता मेरा है सबसे प्यारा॥

पहेली

रेगिस्तान का है जहाज।

क्या कहते हैं उसे आज॥

लम्बी सूंड और चौड़ा कान।

देखो चित्र करो पहचान॥

उछल कूद जो बच्चा करता।

मम्मी-पापा उसे यह कहता॥

अम्मा की बहन जो कहलाता।

बिल्ली के साथ वह रिश्ता आता॥

नकल करने में जो हो आगे।

लोग बोले इसका नाम लगाके॥

रंग है पीला काली धारी।

जंगल का है सबसे बड़ा शिकारी॥

29

<u>संदेशा</u>

काँव-काँव करते कौवां आया।

दूर गाँव से संदेशा लाया॥

समझ कौंवे का संदेशा।

आयेगा कोई हुआ अंदेशा॥

कोई न कोई आयेगा मेहमान।

चाहे हो जाना या अनजान॥

मम्मी समझ गई कौंवे की भाषा।

आयेगा मामा बंधी आशा॥

मीठे-मीठे पकवान बनाकर।

रास्ता देखते रहे दिनभर॥

दिन लगा जब ढलने।

मामाजी दिखे घर के सामने॥

मामजी को देख प्रसन्न हुये।

रोटी देकर कौंवा को विदा किये॥

30

फंस गया जाल में

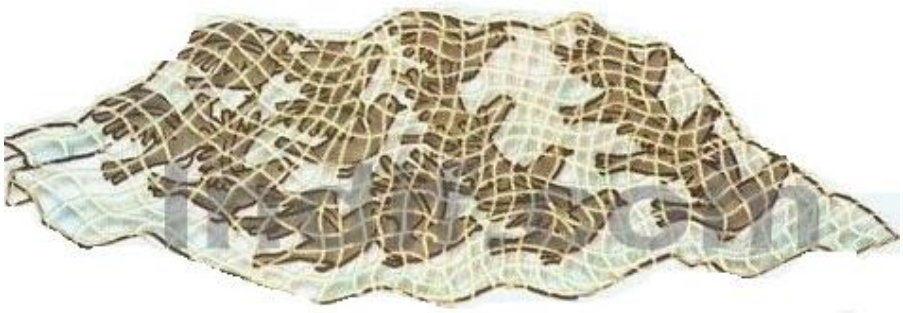

चिड़ियों के झुण्ड एक दिन

खोजने निकले दाना।

पर उनके भाग्य में

लिखा नहीं था पाना॥

उड़ते-उड़ते थकने पर

सब बैठे पेड़ के ऊपर।

नीचे जमीन पर पड़े

दानों पर गया नजर॥

एक-एक कर दाना चुगने

नीचे जमीन पर आये।

चुगते-चुगते अपने को

जाल में फंसा पाये॥

दूर बैठा शिकारी

देख हुआ बहुत प्रसन्न।

तरकीब उनका काम आया

जाल के नीचे रखने का अन्न॥

अपने करीब शिकारी को

आता हुआ देखकर।

जाल लेकर उड़ गये

सब चिड़िया मिल जुलकर॥

सच ही कहा है

जब संकट का हो समय॥

तुरंत लेना चाहिये

सही और दृढ़ निर्णय॥

नया कपड़ा

पापा मेरा शहर गया।

कपड़ा लाया नया नया॥

उसे पहनकर मैं इतराउँ।

सबके घर जाकर दिखलाउँ॥

कपड़े मेरे थे अच्छे।

रोने लगे देख सब बच्चे॥

आकर घर सोंच लिया।

कपड़ा उतारकर रख दिया॥

हुई रात चूहा आया।

कपड़ों के साथ रात बिताया॥

कल था जो नया नया।

चूहा सारा कुतर गया॥

आलू राजा

गोल मटोल आलू राजा।

बजा रहा था बैंड बाजा॥

मूली को देख नाचती गाती।

भिण्डी भी आई ईतराती॥

बैंड बाजे की धुन पर।

दोनों नाचे झूम झूम कर।।

सब सब्जी वहाँ खड़े खड़े।

देखे नाच हो मगन बड़े॥

खाना बनाने की बारी आया।

रामू पकड़कर सबको लाया॥

भागा आलू छोड़ बैंड बजाना।

हुआ बंद सबका नाचना-गाना॥

मच्छर

भुन-भुन कर मच्छर आता।

हम सबको काट जाता॥

इनसे होती कई बीमारी।

रखें साफ घर सबकी जिम्मेदारी॥

जहाँ जहाँ पानी भरता।

वहाँ-वहाँ मच्छर पनपता॥

बीमारी से जो बचना चाहे।

नाली प्रतिदिन साफ करायें॥

स्वच्छता जीवन में अपनायें।

डेंगू और मलेरिया दूर भगायें॥

आदत बनायें मच्छरदानी में सोना।

नहीं तो पड़ेगा रोज रोना॥

34

बकरे की माँ

घर आकर माँ

हुई बहुत उदास।

नहीं देखी जब

लाडले को अपने पास॥

बाहर निकल कोठे से

ईधर-उधर नजर दौड़ाई।

दूर खेलता लाडला

पड़ी उसे दिखाई॥

में में की आवाज

माँ ने जब लगाया।

उछलते कूदते लाडला

करीब माँ के आया॥

दूध पिलाकर माँ

मन में की विचार।

कर सकती हूं कब तक

अपने लाडले को प्यार॥

कुछ दिनों के बाद

कोई आदमी आयेगा।

मेरे प्यारे लाडले को

मुझसे दूर ले जायेगा॥

संशय में रहे सदैव

हम सब मॉओं की जान।

वह दिन कब आयेगी

जब दया भाव रखें इंसान॥

लाडले के बिन अपने

मैं नहीं जी पाउंगी।

बकरे की माँ हूं

कब तक खैर मनाउंगी॥

पुस्तक पढ़ें

बन पुस्तक पढ़

इंसान सच्चा।

आदत है यह

सबसे अच्छा॥

क्या भला क्या बुरा

तुम्हे यह सिखायेगी।

सूझेगी न राह

राह तब दिखायेगी॥

इसका है अनमोल साथ

दूर क्यूं है रहता।

ईधर-उधर की बातों में

समय व्यर्थ क्यूँ करता॥

नाम है जिनका जग में

पुस्तक बना आधार।

इसे बनाकर मित्र

सपना कर साकार॥

छोड़ देते हैं साथ सब

रह जाता है ज्ञान।

समझ लिया जिन्होंने

बना वहीं महान॥

कर प्रतिज्ञा जीवन में

पुस्तक को मित्र बनाओगे।

सच्चा और अच्छा बन

हर जन से मान पाओगे॥

चतुर सियार

एक गाँव के पास

रहता था चतुर सियार।

शिकार की खोज में

निकला होकर तैयार।।

गाँव के चौराहे पर

पिंजरे में था बंद शेर।

उसे जोर की भूख लगी

होने लगी जब देर॥

भोजन पाने के लिये

शेर ने तरकीब लगाया।

वहाँ से जाते आदमी को

अपने पास बुलाया॥

पिंजरे के पास आने पर

रो रो कर शेर बोला।

हृदय में दया उमड़ने पर

आदमी ने दरवाजा खोला॥

बाहर निकलकर शेर ने

दिया उसे धन्यवाद।

कहा पिंजरे के अंदर जाउंगा

पहले तुम्हें खाने के बाद॥

शेर की यह मक्कारी

सियार ने जाना जब।

आदमी की जान बचाने

उपाय सोंचने लगा तब॥

सियार ने पूछा शेर से

क्या तुम पिंजरे में रहते हो।

भारी भरकम शरीर से

पिंजरे में कैसे घुसते हो॥

पिंजरे में घुसकर

शेर ने दिखलाया।

तुरंत उस आदमी से

दरवाजा बंद कराया॥

भूख में तड़फते रह गया

शेर जो था बड़ा मक्कार।

अपने रास्ते चले गये

आदमी और चतुर सियार॥

दादाजी का चश्मा

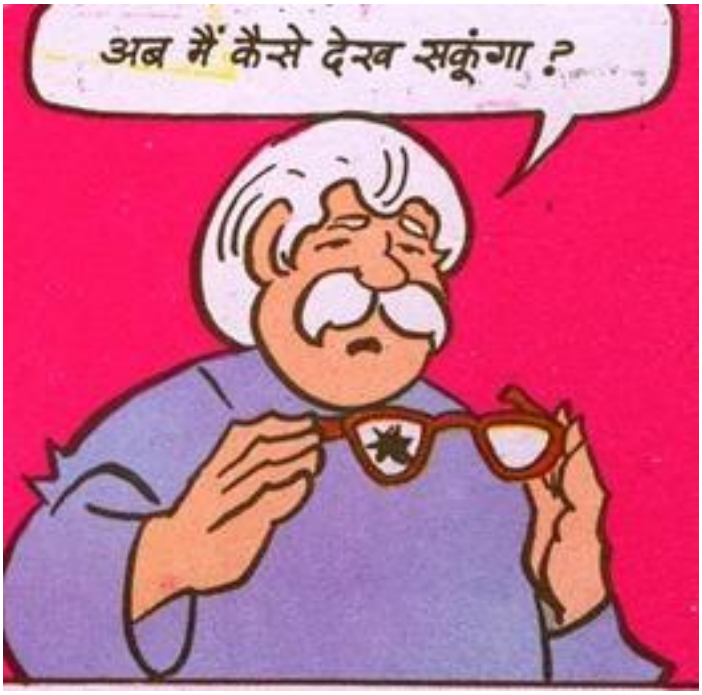

चश्मा पहनकर दादाजी

पढ़ने लगा अखबार।

कुछ देर बाद

जाना पड़ा बाजार॥

वापस आने पर

चश्मा नहीं था वहाँ।

जाते समय दादाजी

छोड़ गया था जहाँ॥

ढूँढा बहुत ईधर-उधर

हो गया दोपहर।

टेबल के नीचे बैठे

चूहे पर पड़ा नजर॥

लगाकर चश्मा चूहा

पढ़ रहा था किताब।

यह चश्मा मेरा है

दादाजी को मिला जवाब।

सुन चूहे की बात

दादाजी को गुस्सा आया।

हॉथ में लेकर छड़ी

चूहे को खूब दौड़ाया॥

भागमभाग में चूहे की

आँखो से चश्मागया गिर ।

अखबार पढ़ने के लिये

चश्मा मिल गया फिर॥

चींटी रानी

चींटी रानी बहुत सयानी

खोज-खोज कर दाना लाती।

बरसात आ जाने पर

बैठ आराम से खाती॥

रख सोंच आगे की

करता है जो काम।

विपदा आने पर

मिलता उसे आराम॥

छोटी सी चींटी

यह बात खूब जानती।

फिर काहे इन्सान

सीख नहीं यह मानती॥

हर पल आराम से

बिगड़े जीवन की धारा।

जीवन उसी का सफल

सींख चींटी का स्वीकारा॥

आओ करें प्रण

चींटी की सीख अपनायें।

थोड़ा-थोड़ा करके

अभी से कुछ बचायें॥

हो गई छुटटी

बज गई घंटी हो गई छुटटी

निकले घर झूमते गाते।

इसे धकेलते उसे धकेलते

रास्ते भर शोर मचाते॥

बच्चों की भीड़ से

लग जाती रेलमपेला।

चारों ओर बिखरे धूल

लगे हो जैसे गोधूली बेला॥

कोई रोके कोई टोके

नहीं मानते बात।

गर्मी हो या ठंड

चाहे हो बरसात॥

कपड़े गंदा देखकर

पूछती माँ हमसे जब।

भोलेपन से फिर

बहाना बना देते तब॥

मेरी सयानी माँ

सब कुछ समझ जाती।

कर बचपन को याद

अपने गोद में बिठाती॥

40

<u>पानी गिरा</u>

बड़े दिनों के बाद।

पानी गिरा आज॥

टप-टप टप-टप बरसा पानी।

स्कूल जाने में हुई परेशानी॥

पहन बरसाती लेकर छाता।

सब ईधर-उधर आता-जाता।

पहन बरसाती मैं निकला जब।

और जोर से गिरा पानी तब॥

लबालब था पूरा रास्ता।

भीग गया कपड़ा और बस्ता॥

भीग कर जब मैं स्कूल पहुंचा।

बोला फिर चपरासी चचा॥

तुरंत यहां से चले जाओ।

जाकर घर छुटटी मनाओ॥

<u>कागज की नाव</u>

गलियों की धार में

कागज का नाव चलाना।

अमिट अनमोल यादें हैं

हम सबका जाना-माना॥

हिचकौले खाते नाव का

तेज धार में चलना।

सीखा गया हम सबको

कठिनाईयों में सम्हलना॥

कभी जानबुझकर

विपरीत दिशा में चलाया।

डूबा उसका नाव

एक कदम आगे बढ़ न पाया॥

बहकर साथ धार के

अनंत में खो जाता है।

सीखा जिसने यह

मंजिल वहीं पाता है।।

मेरा देश

यह देश है त्यौहारों का।

रीति-रिवाज और परम्पराओं का॥

सभी धर्मों का मान है।

भाषाओं का सम्मान है॥

हो गोरा या फिर काला।

सभी है देश का रखवाला॥

मिटा है नर-नारी में भेदभाव।

शिक्षा का हुआ है फैलाव॥

विविधता में एकता है पहचान।

मेरा देश है मेरा शान॥

रविवार

हम सबको होता है

जिस दिन का इंतजार।

छ दिनों के बाद

आता है रविवार।

सोम से शनि तक

रोज रहता भागमभाग।

कड़कती ठंड या बरसात

उगले सूरज चाहे आग॥

रात में कह दिया था

अम्मा देर से जगाना।

कल रविवार है

कहीं आना है न जाना॥

खूब करेंगे मौज मस्ती

गप्पें भी लड़ायेंगे।

अभी नहीं तो कभी नहीं

अपने लिये जी पायेंगे॥

हो जायेंगे जब बड़े

रहेगा आपाधापी और मारामार।

वक्त कहां याद रखने की

सोम बुध है या रविवार॥

दिन महीने साल

सेकण्ड से मिनट

मिनट से घण्टे बनते हैं।

चौबीस घण्टे के दिन

सात दिन में सप्ताह बदलते हैं।।

सोम मंगल बुध गुरू

शुक्र शनि रवि दिनों के नाम।

जिसमें रहकर करते

संसार के हर जन काम।।

तीस इक्तीस दिन के महीने

बारह महीने के बनते साल।

सेकण्ड घंटों और दिन से

बनता है समय जाल॥

तीन सौ पैंसठ के बदले

तीन सौ छैसठ जब हो जाता।

बढ़े हुये दिन से

चौथा अधिवर्ष कहलाता॥

लोग कह गये

बात यह अति सुंदर।

पूरा कर लो काम

समय चक्र के अंदर॥

45

वर्ष कैलेण्डर

पड़े कड़ाके की ठंड

रहे न कोई गरम कपड़ो बिना।

रहता है तब

जनवरी फरवरी का महीना॥

न गर्मी न ठंड

छूटे सबका हल्का पसीना।

मार्च अप्रैल का समय

होता है मन भावन महीना॥

मचा हो हाहाकार

तड़फे सब पानी बिन।

तेज किरणों से भरा

जलाये मई जून का दिन॥

छाये काले बादल

हवा चले पूर्वाई।

सम्पूर्ण चराचर के लिये

जुलाई अगस्त जीवनदायी॥

अमृत तुल्य जल

सृष्टि में डाले जान।

हल्की वर्षा खुले बादल

सितंबर अक्टूबर की पहचान॥

कम होता सूरज की किरणें

रमणीयता फैले प्रकृति के अंदर।

लगे मुझे सबसे प्यारा

नवंबर और दिसंबर॥

<u>जीवन का रेल</u>

अलग-अलग हर कोई

दिखला रहा है खेल।

कभी धीमी कभी तेज

चले जीवन की रेल॥

दुख-सुख है स्टेशन

रुकती जहां फिर है चलती।

चलाने वाले का वश नहीं

निरंतर जिससे आगे बढ़ती॥

है एक स्टेशन मास्टर

चाहे जहां रोक लेता है।

हो नहीं निरंकुश

संदेश कर ऐसा देता है॥

जीवन के इस सफर में

कई मुसाफिर है आते-जाते॥

धीरज से बैठने वाला

अपना मंजिल पाते॥

रूककर चलना चलकर रूकना

सिखला जाती है रेल।

इंजन बंद जब हो जाये

खतम हो जाता सब खेल॥

48

<u>जहाज</u>

बैलगाड़ी बस ट्रेन से

आगे बढ़ गये हैं आज।

आने-जाने में कहीं

उपयोग होने लगा है जहाज॥

जिन स्थानों के बारे में

केवल सोंचा करते।

जहाज के उपयोग से

आज वहाँ पर रहते॥

मन चाहे जहाँ

वहाँ के लिये निकल।

सालों का समय

घण्टों में गया बदल॥

एक-दूसरे के करीब

विश्व आज है जो आया।

संभव हुआ यह सब

राइट बंधु ने जब जहाज बनाया॥

राइट बंधुओं के प्रयास से

एक-दूसरे के निकट आये हम।

चारो ओर फैली

वसुधैव कुटुम्बकम॥

48

उपयोगी-साधन

किसानों का मददगार

खेती में आये काम।

बैलगाड़ी का जगह लेने वाला

टैक्टर जिसका नाम॥

हो अनाज या फल सब्जी

सभी जगह पहुंचाता॥

छोटे-बड़े आकार का

वह ट्रक कहलाता॥

दूसरे जगह आने जाने में

जिसके भरोसे रहते।

लोगों को लाताए ले जाता जो

हम उसे बस कहते॥

जाना हो दूर अगर

कलकत्ता या चंदन बाड़ी।

बैठकर जाये वहाँ

छुक-छुक इंजन गाड़ी॥

दूर देश की यात्रा भी

संभव हो गया है आज।

जहाँ आने-जाने में

उपयोग करते हैं जहाज॥

टांगा रिक्शा बैलगाड़ी

बीते दिनों की हो गई बात।

ऑटो मोटर सायकल से

होती अब दिन की शुरूआत॥

49

<u>प्रकृति</u>

हरी-हरी मखमली

चादर जैसी बिछाई हो।

धरा पर पड़ रही

जैसे तरुवर की परछाई हो॥

अनुपम दृश्य देख धरा की

नयन निश्चल हो जाये।

मोर पपीहा बन मन

गीत उमंग के गाये॥

टप-टप बरसता जल-बूंद

लगते हैं कोई रजत कण।

हरी मखमली चादर में

नक्कासी कर रहा हो हर क्षण॥

धीरे-धीरे जब

पकड़ती पूर्वाई जोर।

बिछ जाती रजकण

धरा के चारो ओर॥

गीत मल्हार गाये

होकर संतृप्त मन।

बेला जैसे होए

प्रिय से प्रियतम का मिलन।

तड़फे सब जल बिन

जंगल में भी एक बार

पानी का पड़ा अकाल।

छोटे-बड़े जीव सभी

समाने लगे काल के गाल॥

जीवों को मरते देख

जंगल के राजा ने सोंचा।

जीव सभी मारे जायेंगे

हल शीघ्र नहीं खोजा॥

अकेले राजा को

कुछ समझ नहीं आया।

बातचीत करने को

जानवरों का सभा बुलाया॥

सोंच समझकर सभी ने

बारी-बारी से उपाय बताये।

पूरे जंगल में

जगह-जगह गडढे बनाये॥

किया प्रण सभी ने

जरूरत अनुसार उपयोग करेंगे।

सीखा नहीं यह अभी तो

एक दिन सारे जीव मरेंगे॥

धीरे-धीरे आया

पानी गिरने के दिन।

गडढे हुये लबालब

नहीं मरें अब पानी के बिन।

बीमार होने से बचो

मौसम जब-जब बदलता है।

कई बीमारी हमें जकड़ता है।।

सर्दी खॉसी जुकाम है उसका नाम।

जिससे नहीं कर पाते काम।।

नाक बहे खांसते रहे शरीर रहे गरम।

छोटे बड़े सभी पर न करे रहम॥

बीमार पड़ने से अच्छा बरतो सावधानी।

ताजा खाना खाकर पीओ उबला पानी॥

सुबह उठकर करो खूब व्यायाम।

स्वस्थ रहकर कर सकोगे हर काम।।

मेरी बातों पर कर लो कुछ मनन।

सेहत से बढ़कर नहीं कोई धन।।

इन्सान बन

अकेले रहकर बड़ा नहीं कोई बनता।

इन्सान होकर यह क्यों नहीं समझता॥

एक शरीर चलाने को होते हैं कई अंग।

फिर आगे बढ़ चलते नहीं क्यों संग॥

कैसे कटेगा रस्ता एक दूसरे के बिन।

अकेले चलते चलते थक जाओगे एक दिन॥

आगे बढ़ए गले लगाए अहंकार को छोड़।

तुम भी एक जीव होए जीवों से नाता जोड़॥

देखना जीवन कितना रसमय हो जायेगा।

बढ़ा एक कदमए दूसरे को दो कदम आगे पायेगा॥

नहीं टिका इस जहां में किसी का अभिमान।

साथ चलकर देख बन जायेगा इन्सान।

माँ की ममता

माँ की प्रतीक्षा करते

चिड़िया के बच्चे सो गये।

कुछ अच्छे कुछ बुरे

सपने में खो गये।।

एक बच्चे ने देखा

माँ की चोंच में है दाना।

झटपट लेकर माँ

घर की ओर हुई रवाना॥

दूसरे बच्चे ने देखा

कुछ समय के बाद।

जमीन पर कराहती माँ

कर रही थी उनको याद॥

नींद खुलने पर दोनों

एक दूसरे को बतलाये।

हो न कोई अनहोनी

सोंचकर मन घबराये॥

सून पंखो की आवाज

मन में बंधी आश।

खुशी से लगे नाचने गाने

पाकर माँ को अपने पास॥

चाहे हो इन्सान

या कोई जीव जगत का।

नहीं है कोई मोल

माँ की ममत्व का॥

54

कलम और बंदूक

अगर पकड़ना हो कलम पकड़

बंदूक नहीं पकड़ना है।

बात अपनी शब्दों में रख

गोलियों से नहीं लड़ना है॥

शरीर में घाव लगाये

बंदूक की गोली और तलवार।

भर जाता जो कुछ पल में

कलम से कर कुत्सित मन पर वार॥

तन नहीं मन है

परिवर्तन के वाहक।

गोली से विनाश है

कलम है क्रांति के चालक॥

मान नहीं मिलता

गोली और तलवार से।

गौतम नानक ने जीता

जग अपने सुविचार से॥

कर प्रतिज्ञा जीवन में

हथियार न कभी उठाउंगा।

अपने सुविचारों को दे आकार

कलम से परिवर्तन लाउंगा॥

मच्छर

बरसात के मौसम में

मच्छर का प्रकोप बढ़ता।

ठहरे हुये पानी में

मच्छर का लावा पनपता॥

ठहरने न दे पानी

हम सबकी है जिम्मेदारी।

मच्छर से होती है

डेंगू और मलेरिया की बीमारी॥

जानलेवा है दोनो

मरते हैं हजारों लोग।

साफ-सफाई न रखें तो

करना पड़ेगा कष्ट भोग॥

तेज बुखार और सिर दर्द

बीमारी के है लक्षण।

कोई न पाये कष्ट

इस पर करे मनन॥

उपचार कराने से अच्छा

सावधानी बरते हजार।

केवल साफ सफाई से

रुकेगा मच्छर का प्रहार॥

56

मन में रख प्रेम

सब के लिये हो प्रेम

रख तू ऐसा मन।

मिलेगा प्रेम सभी का

जो है अनमोल धन।।

प्रेम पाना दूसरों का

होता नहीं सरल।

प्रयासों से संभव है

आज नहीं तो कल॥

जीवन-पथ

चाहे लाख मुसीबत आये

जीवन पथ पर चलता चल।

निरंतर कष्टों से तपकर

बढ़ेगा तेरा आत्मबल॥

आराम की चाहत छोड़

कष्टों को जिसने गले लगाया॥

पर्वतों के आने पर भी

उन्होंने मंजिल पाया॥

आत्मबल का दीप जलाए

कर मन से अंधेरा दूर।

लाचारी का भाव छोड़

रास्ता सुझेगा जरूर॥

अनंत शक्ति है मन में

देख अंदर झांक के।

चिंगारी छिपा होता है

जैसे भीतर राख के॥

छोड़ ज्यादा सोंचना

क्या खोएगा क्या पाएगा।

जीवन में वही मिलेगा

जैसा पल पल बोते जायेगा॥

जैसा तेरा सुख दुख

वैसा ही सबका मान।

जन्म लेगा फिर अपनापन

मिलेगा और सम्मान॥

नफरत और कड़वाहट

मन में न पलने दे।

छोटी-मोटी बातों को

घर न करने दे॥

क्षमा जीवन का है

सबसे बड़ा सार।

जिस दिन यह सीख जायेगा

मिलेगा प्यार ही प्यार॥

58

<u>कर्म</u>

कर्म ऐसा कर

अपना सब हो जाये।

बोल ऐसी वाणी

सुध बुध खो जाये॥

क्षमा ए त्याग की मूर्ति बन

जग को वश में कर ले।

जब आये मौत पास

हंसकर बाहों में भर ले॥

क्या डरना जीवन से

जो है क्षण भंगुर।

मत समझना कभी

मौत खड़ा है दूर॥

जीवन और मृत्यु

दोनों है अपना साथी।

एक के बाद दूसरा

बारी बारी से आती॥

समझ जीवन का सार

जीवन जी ले जी भर।

न हो शेष आस

जब खतम हो सफर॥

रक्षाबंधन

आता है जब

सावन मास का पूर्णमासी।

रक्षाबंधन का पर्व

मनाते हैं भारतवासी॥

व्दापर युग में द्रौपदी का

हुआ था जब चीर हरण।

रक्षाकर भगवान ने

दिया था अनुपम उदाहरण।

भगवान की तरह भाईयों ने

प्रतिज्ञा लिया कठिन।

हर हाल में रक्षा करेंगे

जब संकट में हो बहिन॥

सभी बहन हर वर्ष

रक्षा धागा पहनाती।

अपने अपने भाईयों से

रक्षा का वचन पाती॥

अबकी बार हम सब

धूमधाम से पर्व मनायेंगे।

भाई बहन के प्यार को

युग युग तक अमर बनायेंगे॥

60

सावन

सावन महिना,

झूम-झूम के मन गाया।

मोर पपीहा चातक तीतर,

झूम खुशी से नाच दिखाया॥

हरा है तरुवर, धरा हरा है,

कण कण में प्रस्फुटित जीवन।

फौहारों के साथ पूर्वाई,

सुधा पान करे तन-मन॥

संतृप्त है आज चराचर,

सबके मन में आस है।

अटल मन कर्म निरंतर,

कहीं न कुछ प्यास है॥

प्रकृति की अनुपम छटा देख,

जग सारा है विस्मृत।

परलोक से भी सुन्दर,

जीवन बसता है जहां नित॥

क्लेश नहीं मेल है,

राग-व्देश से परे हर्ष है।

प्रकृति की रस रचना में,

जीवन का सच्चा उत्कर्ष है॥

61

<u>सूरज</u>

लाल लाल आग का गोला

सौर मण्डल का है मुखिया।

जिनसे किरण पाकर

प्रकाशमय होती यह दुनिया॥

नाभिकीय संलयन की प्रक्रिया

सूरज को गरम रखता।

छ हजार डिग्री से0 तक

तापमान सदैव रहता॥

पन्द्रह करोड़ किमी

दूर है सूरज यहां से।

आठ मिनट का समय लेती

रोशनी आने में वहां से॥

सौर-मण्डल में कुल

नौ ग्रह पाये जाते हैं।

अपनी धुरी के साथ जो

सूरज के भी चक्कर लगाते हैं॥

केन्द्र बिन्दु बनकर

ब्रम्हांण्ड को है चलाता।

ग्रह-नक्षत्रतारों को

रास्ता दिखलाता॥

चन्द्रमा

ग्रहों के जो चक्कर लगाये

उपग्रह वह कहलाता।

पृथ्वी के उपग्रह में

चन्द्रमा का नाम आता॥

कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा

धीरे-धीरे घटते जाता।

शुक्ल पक्ष में यह

बढ़ने के क्रम में आता।

अपनी धुरी पर घूमने से

यह स्थिति होती निर्मित।

चौदह दिन का समय

दोनों पक्ष में घूमने का है निश्चित॥

कृष्ण पक्ष में अमावस्या

शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा आता।

इस तरह प्रत्येक माह

बारी बारी से इसे दोहराता॥

चन्द्रमा को प्रकाश

सूरज से है मिलता।

सामने आने के अनुपात में

छिपता और है दिखता॥

लोकोक्ति पर कविता

वास्तविक गुण से ज्यादा

जब इंसान अपने में बतलाये।

तब कहा जाता है

अधजल गगरी छलकत जाये॥

आवश्यकता के अनुपात में

वस्तु का दिखे न कोई सिरा।

ऐसे संदर्भ में आता है

ऊंट के मुंह में जीरा॥

दो असमान व्यक्तियों में

जब कोई तुलना का आफत मोले।

उस समय यह मुहावरा

कहां राजा भोज कहां गंगू तेली बोले॥

स्वयं गलती कर

समझाते मित्र या सहेली को॥

ऐसे में उपयुक्त रहे

उल्टा बॉस बरेली को॥

अपनी गलती का दोश

जिन्होंने दूसरों पर मढा।

चरितार्थ करते हैं वह

नाच न जाने आंगन टेड़ा।।

64

पृथ्वी

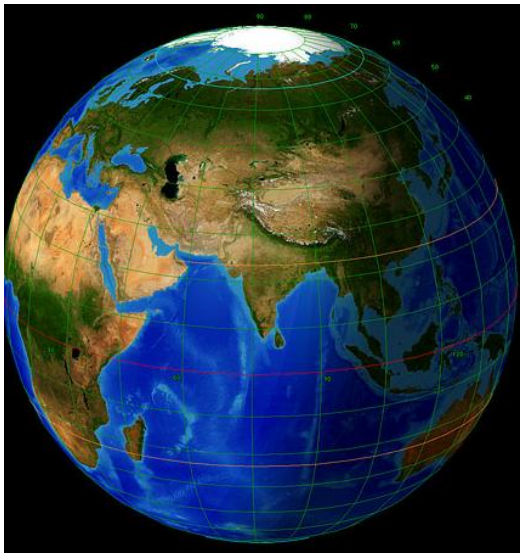

जिस ग्रह पर

जीव जगत रहते हैं।

दुनिया वाले

उसे पृथ्वी कहते हैं।।

दूरी के अनुसार सूर्य से

तीसरे क्रम पर आती है।

अन्य ग्रहों की तरह

सूर्य का चक्कर लगाती है।।

हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के योग से

पानी का बनना हुआ संभव।

उपयुक्त परिस्थिति पाकर

जीवन का हुआ उदभव।।

जीवन रक्षा के लिये

पृथ्वी का करें संरक्षण।

अंधाधुंध दोहन छोड़

पारिस्थितिक तंत्र का करें परिवधर्न।।

अपनी जिम्मेदारियों को

समय रहते समझ न पाये।

दिन नहीं होगा दूर

जब अस्तित्व संकट में पड़ जाये॥

किलोल

माह के अंत होते ही

हृदय में उठे खुशियों के तरंग।

मन व्याकुल हो उठता है

समय बिताने किलोल के संग॥

कहानी पहेली चुटकिला

होती और गीत-कविता॥

गुरूजी के संग पढ़ते

रमेश, राजू, गीता और सरिता॥

खेल-खेल में पाते हैं

सभी विषयों का ज्ञान।

तोड़ कक्षा की दीवारें

पा रहा सब बच्चों में मान॥

आरंभ हुआ है जब से

किलोल का हमारे बीच आना।

कठिन हुआ है तब से

मन को दूसरे चीजों से बहलाना।।

दिन-रात हम सभी

करते रहते हैं प्रार्थना।

अनवरत जारी रखें

आलोक सर इसे छापना।

पेड़ लगाओ

पेड़ एक जरूर लगाओ

जो है जीवन आधार।

मत तोड़ो मत काटो

दो इसे भरपूर प्यार॥

फलदार हो या छायादार

सबका है महत्व।

हमसे नहीं है यह

इससे है हमारा अस्तित्व॥

बहुत सारे जीव जन्तु

खाते हैं इसके फल।

उल्लासमय होता जीवन

कल आज और कल॥

पानी का है वाहक

प्रकृति का है अनमोल धरोहर।

जीवन से बड़ा नहीं तो

समझो जीवन के बरोबर॥

समझो खुद दूसरों को समझाओ

पेड़ो की है जो कीमत।

वक्त रहते जान जाओ

उत्पन्न विपदा की हकीकत॥

वक्त

बिना भेदभाव के सबको

चौबीस घंटे मिलते।

कुछ का जीवन हंसकर

कुछ का रोकर बीतते॥

जो गुजारे जीवन खुशियों में

समझ अपने को भाग्यवान।

व्यक्ति का नहीं कुछ इसमें

वक्त होता है बलवान॥

रंक को राजा राजा को रंक

वक्त बना सक्ता है।

इंसान जितना भी हो शक्तिशाली

वक्त के आगे बेबस रहता है॥

मत चाह मोड़ना दिशा वक्त की

हो सके तो चल साथ साथ।

आसमान पर उड़ने वाले

करना सीख लो जीवन की बात॥

जब तू न सीखना चाहे

वक्त सब सीखा देगा।

अक्ल ठिकाने आयेगा

जब वक्त अपनी कीमत बतलाएगा।।

सम्हल जा होश में आकर

वक्त को बना ले साथी।

कंधे से कंधा मिला

दिया के साथ जैसे बाती॥

68

भेदभाव छोड़ो

प्रकृति ने एक बनाया

फिर कैसा भेदभाव।

छोड़ जाति धर्म की बातें

मन में रखें समभाव॥

किसी तरह का भेद रखना

होता नहीं है अच्छा।

सबको अपना समझ

बन इंसान सच्चा॥

इंसानियत से बढ़कर

दूसरा और कुछ नहीं।

सूत्र मानकर देख इसे

स्वर्ग मिल जायेगा यहीं॥

भेदभाव के भंवर में फंसकर

करने लगेगा जब पाखंड।

समरसता के बिना

समाज हो जायेगा खंड खंड॥

प्रकृति का है तू हिस्सा

मत भूलना यह कभी।

काम ऐसा एक कर

मरने पर याद रखे सभी॥

69

<u>सुख और दुख</u>

सुख और दुख

मन का एक एहसास है।

मानो तो बहुत दूर

समझो तो बहुत पास है।

ढूंढते हैं ईधर उधर

भीतर ढूंढना छोड़कर।

टकराकर चले जाते हैं

नजरे अपनी मोड़कर॥

बेकार की उलझनों में फंस

नासमझ बन भटकते रहे।

जो है अपने भीतर

उसे दर दर ढूंढते रहे॥

अंर्तशक्ति को जागृत कर

स्व को जब पहचानेगा।

सम है सुख दुख का भाव

उस दिन यह जानेगा॥

समता का भाव रख

केवल अपना कर्म कर।

न रहेगी कोई चिंता

तुम्हे अपने जीवन भर॥

70

कोशिश कर

असफलता से क्या डरना

तू कोशिश करना मत छोड़

सफलता पथ पर ही मिलेगी

तू चलने की दिशा मत मोड॥

कोई क्या कहता है

इस पर न दे ध्यान।

पूर्ण मनोवेग से

कोशिश करता रह जी जान॥

कोशिश करने में छिपा है

सबकी सफलता की मात्रा।

असफलता को शक्ति बना

पूर्ण कर अपनी जीवन यात्रा।।

मन की शक्ति खो देने से

नहीं है कोई बड़ी असफलता।

बस अडिग हो चलता रह

चाहे मिले जितनी विफलता॥

सफलता का यह मूल मंत्र है

जीवन भर याद रखना।

चाहे जो हो जाये

नहीं छोड़ेगा कोशिश करना॥

पंछी

अगर मैं पंछी होता

ऊंचे आसमान में उड़ता।

बिना किसी चिंता के

मन चाहे जहां घूमता॥

न होती मोह माया

दुनियादारी की जंजीर।

कब होगा मेरा

ऐसा सुंदर तकदीर॥

कुतर दिये गये है

पंख मेरे सभी।

बंधन से आजाद

हो पाउंगा क्या कभी॥

मन मचलता है

देखकर के आसमान को।

दबा रखा है किसी ने

मेरे इस अरमान को।

पंछी होकर भी मैं

कैद हूं पिंजरे में आज।

केवल इस प्रतीक्षा में

बुलायेगा देकर कोई आवाज॥

पिंजरे से बाहर आने को

करता रहा प्रयास।

धीरे धीरे जागृत हुई

मन में असीम विश्वास॥

तोड़ बंधन के पिंजरे

बाहर मैं निकल आया।

मीलों विस्तारित आसमान में

अपने आप को पाया॥

धूप और छांव

जीवन क्या है

धूप छांव का एक खेल।

रहना है मजे से तो

करले इससे मेल॥

बीत जायेगा उल्लास में

छोटी सी जिंदगी यह।

संघर्ष है आनंद भी है

समरूप दोनों में रह॥

माना मुश्किल का दौर

कठिन होता है सहने में।

सच्चा आनंद नहीं मिलेगा

हर पल मौज से रहने में॥

छांव की अनुभूति होती है कैसे

वह राही ही बतला सकता है।

जो पल पल सूरज के

तपते धूप को सहता है॥

हर अंधेरी रात का

होता है कभी न कभी भोर।

सुगम रास्ते की चाह छोड़

निकल पड़ दुर्गम पथ की ओर॥

73

<u>आने वाला</u>

घर की छत पर रोज

कौंवा आकर बैठता है।

देखता हूं जब उसकी ओर

पंख फैलाकर कुछ कहना चाहता है।।

मैं भी कुछ समझने का प्रयास कर

अनुमान लगा कर

दरवाजे की ओर टकटकी लगाये

मन ही मन सोंचता हूंए

शायद वह कहना चाह रहा है

आज है कोई आने वाला॥

सुना हूं छत पर बैठे कौंवे का

कॉव कॉव करना व्यर्थ नहीं जाता है।

आज नहीं तो कल

कोई न कोई जरूर आता है॥

व्याकुल हो प्रतीक्षा करते

दिन बित जाता है

रात हो जाती है।

कभी कभी हफ्ते क्या

महिनों गुजर जाते है।।

पर कम नहीं होता

मन की वह आस।

महिनों मन के भीतर रह

कहता अंर्तमन का विश्वास।।

कौअे की कॉव कॉव

यूं व्यर्थ नहीं जायेगा।

अभी नहीं इस साल नहीं

कभी न कभी कोई साल सही

आने वाला जरूर आयेगा॥

आगे भी सुनकर

फिर कौवे की कॉव

मन का विश्वास जाग जाता है।

दरवाजे पर हल्की आहट

मन की बेचैनी बढ़ाता है।।

सोंचता हू रह रह कर

कौन सी वह शक्ति है

मन में विश्वास बढ़ाने वाला।

कह उठता है अंतर्मन

अभी इसी पल आज ही

है कोई आने वाला।।

नये सपने गढ़

बन इतना काबिल

खुद अपना तकदीर लिखो।

सपना टूट जाने पर

दूसरा सपना गढ़ना सीखो॥

हांथ की रेखाओं में होती है तकदीर

निकल जाओ इस भ्रम से।

लकीर मिटते और बदलते हैं

श्रमवीरों के परिश्रम से॥

मोड़ नदी की धारा

पर्वतों का सीना चीर।

हांथो की रेखा बदले हैं

ऐसे भी है परमवीर।।

रेखाओं पर है विश्वास जिसे

वह हर पल ठगा जाता।

मंजिल के पास आकर

रास्ता पहचान नहीं पाता॥

लगा ध्यान कोशिश कर

अंतर में छिपी शक्ति को पढ़।

सपनो के टूट जाने पर

नित नये सपने गढ़॥

गांधीजी का संदेश

रहो साफ करो साफ

आसपास के परिवेश को।

पाना है निरोगी काया

आत्मसात करए गांधीजी के संदेश को॥

न हो विवशता या लाचारी

आदत में परिणित कर।

परिवेश रखने से अच्छा

खुशी मिलेगी जीवन भर॥

मैंने नहीं उसने किया

मेरा नहीं दूसरे का काम है।

प्रवृतिगत यह कमजोरी

आज सबसे ज्यादा बदनाम है॥

मन ही मन सब सोंचते

क्या इससे कभी मुक्त हो पायेंगे।

आगे बढ़कर पहल तो कर

पीछे पीछे लोग दौड़े आयेंगे।।

बहुत खो चुके हैं

न कर और देर अब।

पहल करने वालों को

सदैव याद रखते हैं सब॥

छत्तीसगढ़ राज्य

सुरम्य वादियों से आच्छादित

पशु पक्षियों के विचरण करते वन।

उंचे पर्वतों से बहती धारा

मोह लेता हर एक मन॥

नदियों की निर्मल धारा

उर्वर रखती वसुंधरा।

शीशम साल सागौन से

जंगल रहते सदा हरा भरा।।

रामगढ़ से अबुझमाढ़ तक

फैली है सभ्यता की निशानी।

भोरमदेव सिरपुर

चम्पारण है जानी मानी।।

सबसे सरल सबसे सरस

लोगों का है रहन सहन।

समरसता और सदभाव में

नित करते चिंतन मनन।।

प्रेम सौहार्द्र भाई चारे का

देते सदैव संदेश।

इतना सुंदर इतना प्यारा

मेरा छत्तीसगढ़ प्रदेश॥

77

<u>घड़ी</u>

हर पल हर दिन सबसे

घड़ी की टिकटिक कहती है।

एक निश्चित परिधि में

हम सबका जीवन कटती है॥

आरंभ होता है जहां से

लौटकर फिर वहीं आना है।

खाली हॉथ आये थे

खाली हाथ ही जाना है॥

आधा रास्ता पूरा करते हैं

घड़ी में बारह बजने पर।

पल भर की आराम नहीं

ऐसा है यह सफर।।

मत सोंचो जीवन पथ में

क्या खोना क्या पाना है॥

घड़ी की सुई की तरह

बस चलते ही जाना है॥

बिना रूके बिना थके

चलना है मुश्किल बड़ी।

पर सबका जीवन है

दीवार पर टंगी एक घड़ी॥

सरहद

मिटा दो सरहद

जो हर जन मन में है।

पूरी कर लो अभिलाषा

जो हर जन जीवन में है॥

लकीर खींची जाती है

सबसे पहले मन में।

पनपनी है नफरतें

हर जन जीवन में॥

भेदभाव के बिना रख

उद्दात दृष्टि वृहत मन।

मिट जायेगी लकीरें

परिष्कृत कर जीवन॥

कुत्सित विचार के कारण

बनती है सरहदें।

दो दिलों के बीच

लगा देते हैं पर्दे॥

मेरा और तुम्हारा

संकेतों के है नाम।

प्रकृति की सुंदर रचना में

सरहद का नहीं कोई काम॥

80

<u>नदी</u>

उंचे उंचे पर्वतों से

नीचे आती पानी की धार।

वसुंधरा में धर लेती है

एक वृहत आकार॥

उतार-चढ़ाव से भरे पथ पर

तीव्र वेग से बहती है।

समतल धरातल पर

शांत चित्त सी रहती है॥

तीव्र वेग की धार

चटटानों से जब टकराती है।।

मन को उव्देलित करने वाली

मधुर आवाज सुनाती है॥

कल कल की आवाज में

जीवनदायी संगीत है।

उल्लासित कर दें मन को

जैसे अपना कोई मनमीत है।।

कल्पनाओं से परे

न जाने कब से बह रही है।

निरंतर साथ चलो मेरे

तुमसे मुझसे कह रही है॥

बसंत ऋतु

वन-उपवन गुंजने लगे

भौरों की गुंजार।

शीतल मंद बहने लगी

बसंत में बयार॥

प्रकृति की अनुपम छटा

इस ऋतु में दिखती है।

अशांत उव्देलित चित्त को

परम सुख मिलती है॥

उड़ते उंचे आसमान में

कलरव करते विहंग।

मन की तार छेड़

हृदय में भरे तरंग॥

बैारमयी आम्र कुंज में

कोयल छेड़ती तान।

मधुर सुगंध बिखेर सुमन

बसंत का करे सम्मान॥

सब मिल करे स्वागत

अव्दितीय अनुपम सौन्दर्य का।

हृदय में धारण कर

संदेश ऋतुराज अमृतमय का॥

हिन्दी दिवस

जन गण मन की शान

जन गण मन की प्राण है।

नसों में बहती रक्त की धारा

स्पंदित हृदय की पहचान है॥

नवभोर की किरण में

दमकते सूरज का एहसास है।

तप्त दोपहरी बैसाख में

ज्वलित सृष्टि का प्यास है॥

स्याह काली रात में

प्रस्फुटित एक चिंगारी है।

दिन के उजाले में

इन्द्रधनुष पर एक सवारी है॥

शशि की शीतलता

नभ का विस्तार है।

नव यौवना की पैर में

बंधी पायल की झंकार है॥

घोर उदासी के क्षण में

अंकुरित संचरित एक आशा है।

रोम रोम को जागृत करने वाली

सप्त अश्व में सवार हिन्दी भाषा है॥

स्वच्छता अभियान

गांधी जी ने जो सपना देखाए

मिलजुल कर पूरा करना है।

प्रेरित कर दूसरों को

स्वयं साफ सुथरा रहना है॥

गंदगी से फैले बीमारी

लाखो लोग कष्ट पाते।

बिक जाता है घर बार

गरीबी के दुष्चक्र में जकड़ जाते॥

समाज की प्रगति भी

प्रभावित होती है इससे।

कब तक बंद रखेंगे ऑख

बर्बाद होते हैं जिससे॥

जागना होगा सबको।

देर नहीं करना है अब

ऐसा परिवेश बनाये

निरोग रहे लोग सब॥

जन जन को जागरूक करने

देना होगा सबको ध्यान॥

मिलेगा हाथ एक दूसरे से

सफल होगा स्वच्छता अभियान॥

बाल दिवस

निर्मल मन कोमल काया

भेदभाव का नही अंश।

अवगुणों से परे

मानसरोवर के हैं हंस॥

सभी के होते आंखो के तारे

पाते खूब दुलार।

मां बाप के प्राण बसते

चाहे हो कुमारी या कुमार॥

फले फूले आगे बढ़े

जीवन हो निष्कंण्टक।

शांति प्रेम का संदेश दे

हर ले सबका संकट॥

सशक्त और समृद बन

भारत का भविष्य गढ़े।

बिना किसी रोक टोक के

निर्भय हो आगे बढ़े।।

सपना पूरा करने नेहरू ने

जन्म दिन समर्पित किया।

बच्चों के इस पर्व को

बाल दिवस का नाम दिया॥

ओजोन परत

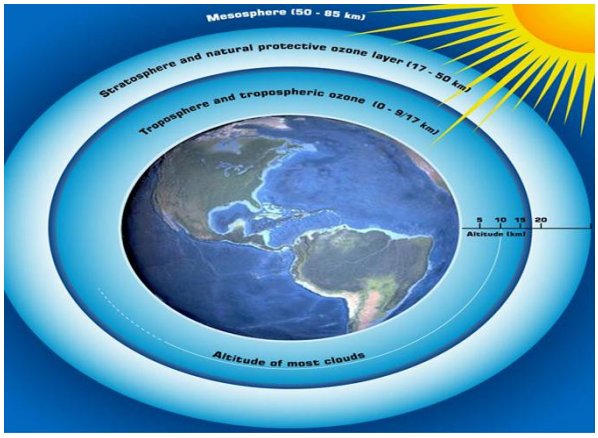

समताप मण्डल के बाद

ओजोन परत होती है।

सूर्य से पराबैगनी किरणों को

पृथ्वी पर आने से रोकती है॥

ओजोन गैस होती है

ऑक्सीजन के अणुओ का योग।

नष्ट करता है इसे

क्लोरा फलोरो कार्बन का उपयोग॥

घर घर में लगे प्रशीतक

स्त्रोत है क्लोरा फलोरो कार्बन के।

ओजोन परत में छेद कर

कारण बना दुख जन जन के।।

त्वचा कैंसर जैसी भयानक

होती है इससे बीमारी।

सम्हल जा आज वरना

हीं तो कलए होगी तेरी बारी॥

लोगों को जागरूक करने

बुध्दिजीवियों ने लिया निर्णय।

विश्व ओजोन दिवस मनाने को

16 सितंबर किया गया तय॥

86

स्वामी विवेकानंद

रामकृष्ण परमहंस के शिष्य

आध्यात्मिकता के ज्ञाता।

रग-रग में जिसके

समाहित थी भारत माता॥

देश हित में छोड़ दिया

जिन्होंने अपना घर।

दिनण्दुखियों की सेवा में

सदैव रहे तत्पर॥

सभी धर्मो का अध्ययन कर

पाया कोई छोटाए न कोई बड़ा।

सारे धर्मों का सार ही

मानवता पर है खड़ा॥

1893 का शिकागो सम्मेलन

एक अवसर के रूप में आया।

जिसने नरेन्द्र दत्त को

स्वामी विवेकानंद बनाया॥

जिसका ध्येय रहा जीवन में

सत्कर्म और सत्संग।

अल्पआयु में पंचतत्व में

विलिन हो गये स्वामी विवेकानंद॥

शिक्षक दिवस

समय के साथ-साथ

बदली शिक्षा की परम्परा।

रूप चाहे जैसा हो

गुरू विहिन नहीं होगी धरा।।

गुरू वशिष्ठ विश्वामित्र

द्रोणाचार्य और परशुराम।

ज्ञान और सदगुणों से

अमर किये अपने नाम॥

पाना है सम्मान तो

छोड़ना होगा सांसारिक तृष्णा।

हर शिष्य में मिल जायेंगे

गुरू को राम और कृष्णा॥

बच्चे भी अपनाये

महान शिष्यों के गुण।

स्थापित करने परम्परा

छोड़े अपना दुर्गुण॥

एक-दूसरे के अपमान का

बने न कोई कारण।

शिक्षक दिवस का यह पर्व

रहे सदैव अति पावन॥

88

गांधी जयंती

2 अक्टूबर 1869 को

पोरबंदर में जन्म लिया।

माता पिता ने बालक को

मोहनदास नाम दिया॥

इंगलैण्ड जाकर पूरी की

वकालत की पढ़ाई।

दक्षिण अफ्रीका में काम कर

खूब प्रसिध्दि पाई॥

1910 के दशक तक भारत में

बढ़ गया था अंग्रेजों का अत्याचार।

1915 में भारत आकर मोहन ने

अंग्रेजों के विरुध्द आंदोलन का किया विचार॥

1915 से 1947 तक

मोहनदास का नेतृत्व मिला।

उनके प्रबल आंदोलन से

स्वतंत्रता का फूल खिला॥

सत्य अहिंसा और प्रेम के

बने विश्व प्रणेता।

स्वतंत्रता संग्राम के

रहे अग्रणी नेता॥

कर्मठता और समर्पण से

जन जागरण लाया।

सर्वजन की सेवा कर

राष्ट्रपिता का नाम पाया॥

89

मेरा गाँव

संकरी-संकरी गलियाँ

मिटटी और ईंटों के मकान।

ऊंचे-ऊंचे चौरे

डयौढ़ी से लगे ढालान॥

सिरपर घड़े रख

तालाब की ओर जाती नारी।

चाहे उम्र हो जितनी

लगते एक दूसरे की संगवारी॥

सुबह शाम खपरैल की छत से

निकलते कंडे से धुआँ।

महिलाओं के मधुर स्वर में

गाना ददरिया और सुआ॥

कोई भी हो तीज त्यौहार

पूरी गलियाँ छान लेते थे।

बिना किसी भेदभाव के

एक दूसरे को शुभकामना देते थे॥

आज पचीस बरस के बाद

खड़ा पुराने बरगद के छाँव में।

ढूंढ रहा था अपना गांव

अजनबी बन अपने गांव में॥

90

दर्पण

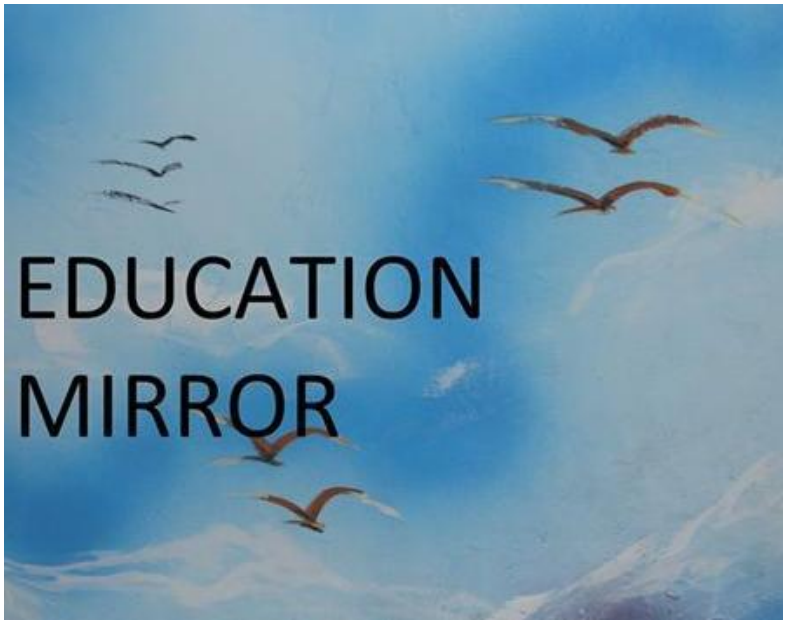

दर्पण के सामने खड़े-खड़े

चेहरा अपना देखा जब।

अनजाना सूरत देखकर

सहसा चींख निकल गई तब॥

कैसा चेहरा लेकर निकला था

कैसा लेकर वापस आया॥

अपने भीतर ही आज

अपने को अजनबी पाया॥

बाहर की चकाचौंध ने

खुद को खुद से अलग किया।

कैसा भंवर जाल है यह

खुद को अजनबी बना दिया।।

सत्कर्म से चेहरे की

रौनक बढ़ती है कई गुणा।

कुपथ का कर्म

अंतरात्मा को करती है अनसुना॥

कर्तव्य पालन की शक्ति से

अंतरात्मा रोशनमय हो जायेगा।

घर लौटकर चेहरा देखने पर

दर्पण में फिर खुद को पायेगा॥

<u>हवा</u>

सुखदायी जीवनदायी

मूल रूप से होती है हवा।

भोर में बहती मंद मंद

लाख रूपये की है दवा॥

ग्रीष्मकाल में बहने वाली

तन-मन में आग लगाती है।

शोले जैसी गरम हवाएं

लू के नाम से जानी जाती है।।

रिमझिम फौहारों के साथ

थम सा जाये जब काम।

सर-सर सर-सर वेग से बहती

हवा पाये पूर्वाई का नाम॥

रात सी ठंडी लगे

जब दिन का पहर।

हिमशिखा की शीतल पवन

कहलाये शीतलहर॥

चाहे जो नाम हो

सृष्टि का है आधार।

जीवों को जीवन देकर

रहता खुद निराकार॥

92

<u>घोंसला</u>

चुन-चुनकर तिनका

घोंसला एक बनाया।

रहे बड़े आराम से

स्वर्ग जैसा सुख पाया॥

जैसा भी हो घोंसला

होता सुख की खान।

बिन घोंसला जो रहे

मिलता नहीं उसे मान॥

छोटा हो या हो बड़ा

घोंसला जरूर बनाओ।

दर-दर भटकने से अच्छा

एक जगह आराम पाओ॥

ठौर नहीं होने पर

जीवन भर कष्ट मिलेगा।

हर किसी की नजर में

केवल तिरस्कार ही दिखेगा॥

आरंभ कर दे अभी से

चुन-चुन कर तिनके लाना।

नहीं तो जीवन भर

पड़ेगा तुम्हे पछताना॥

अमीरी और गरीबी

रेखाओं को मानने वाले

रह जाते हैं फकीर।

कर्म पथ पर चलने वाले

बन जाते हैं अमीर॥

मेहनत बदल देती है

हांथों की लकीर।

कर्म पथ पर चलने वालों की

जागृत होती है जमीर॥

भाग्य नहीं बदल सकता

पड़ो न इन बातों में।

केवल तू विश्वास रख

अपने दो मजबूत हाथों में॥

गरीबों को भी हमने

बनते देखा है अमीर।

कड़ी मेहनत से जिन्होंने

लिखी खुद तकदीर॥

जब लोग सभी

सूत्र यह अपनायेगा।

अमीरी गरीबी का भेद

उसी दिन मिट जायेगा॥

<u>जंगल</u>

ऊंचे-ऊंचे वृक्ष खड़े हों

फैली हो हरियाली चारो ओर।

नभ में जब बादल उमड़े

बहे हवा करते शोर॥

मोर पपीहा चातक तीतर

करे जहां बसेरा।

शेर हिरण हाथी भालू

डाले यहां पर डेरा॥

हर्रा बहेरा महुआ जामुन

होते फल हजार।

संजीवनी के रूप में

औषध पौधों के कई प्रकार॥

शुध्द हवा देती सबको

पानी खूब बरसाये।

देख धरा के गहने को

जन-जन का मन ललचाये॥

रखना चाहें हम सुरक्षित

अपने आज और कल को।

वृक्षारोपण का प्रण कर

बढ़ाते रहे जंगल को॥

रोटी

जीवन में अनमोल है

रोटी का स्थान।

राजा हो या रंक

भूख सबकी एक समान॥

मेहनत कर इसे पाये

महिमा वही जाने।

छीनकर खाने वाले

कीमत क्या पहचाने॥

हक छीनने से अच्छा

मेहनत कर खाना खाओ॥

अपयश के बदले

जन-जन से यश पाओ॥

क्या रखा है जीवन में

क्यों छीनें हक किसी का।

मिल बॉट कर खाओ

जीवन नाम है इसी का॥

देखें न जग में

इंसान कोई दुर्दिन।

वक्त ऐसा न आये

मरे कोई रोटी बिन॥

<u>नकल</u>

छोड़ नकल करना

कहना तू मेरा मान।

भीतर की शक्ति जागृत कर

अपने आप को पहचान॥

जैसा तू है

दूसरा हो नहीं सकता।

नकल करने के होड़ में

समय क्यों व्यर्थ करता॥

प्रकृति ने बनाया है

सबको अव्दितीय और अनुपम।

जगत में कोई नहीं है

एक दूसरे के सम॥

अपने आप को जाने बिना

बढ़ सकता नहीं कोई आगे।

बुलंदी नहीं उसके लिये

निरंतर नकल के पीछे भागे।।

इसी में है जग की सुंदरता

हो हम सब अलग-अलग।

विविध गुणों से परिपूर्ण

जले दीप सा जगमग जगमग॥

97

<u>वीर जवान</u>

जन-जन को नाज हो जिस पर

जन-जन का जो शान।

वतन पर मर मिटने वाले

भारत के वीर जवान॥

नहीं है कोई भेद इनमें

चाहे हो कोई धर्म।

देश की रक्षा में तत्पर

इनका एक है कर्म॥

थल हो या जल

या हो उंचे आसमान।

लहर लहर तिरंगा फहरे

हर भारतीय की है अरमान।।

देश की खातिर अपना

सर्वस्व न्यौछावर करने वाले।

अपनी ही धुन में मस्त

देश प्रेम के ये मतवाले॥

जीना यहां मरना यहां

हर सांस करे कुर्बान।

कर्तव्य पथ पर समर्पित

ये वीर है महान॥

खून का एक एक कतरा

देश प्रेम का दें पैगाम।

ऐसे वीर जवानों को

हमारा शत शत प्रणाम॥

तोता मैना

तोता-मैना का संदेश

रहो प्रेम से एक साथ।

जहां संदेह उत्पन्न हो

खुल कर करलो बात॥

संवाद रामबाण है

हर मुश्किल से पार पाने का।

अपनो से अलग हुये

लोगों के साथ आने का॥

एक डाली पर रहने वाले

कब तक दूर रह सकेंगे।

देख देख कर एक दूसरे को

बिन बोले कब तक रहेंगे॥

न बढ़ने दें अहम इतना

बन जाये मन में दरार।

चुप्पी उतनी ही अच्छी

झलके जिसमें इंतजार॥

बस इतना समझ लो

जीवन है आनी जानी।

अगर रहना है प्रेम से

याद रखो तोता मैना की कहानी॥

99

<u>लालच</u>

जो न हो अपना

उसे पाने की करे चाह।

जैसे भी हो मिल जाये

रास्ते की न करे परवाह॥

अपनों से बैर करके

जागृत आत्मा को सुला दे।

क्या अच्छा क्या बुरा है

मन से यह भाव भुला दे॥

लगा रहे लूट खसोट में

मूल मंत्र बन जाये बेईमानी।

जन मानस के दुख दर्द

स्वार्थ के आगे लगे बेमानी।।

मरते इंसान के भी

कोई काम न आना चाहे।

भलाई के काम छोड़

पकड़ ले बुराई की राहें।।

उन्हीं लोगों में होते हैं

लक्षण यह सब सच॥

जिनके मन में भरा हो

कूट-कूट कर लालच॥

स्वाभिमान

जब अस्तित्व का

होने लगे भान।

तब आदमी में

जागृत होता है स्वाभिमान॥

गुलामी की मानसिकता

परवश में कर देता है।

मैं भी कुछ हूं

भावना मन से हर लेता है॥

पद चिन्हों पर चलने वाले

बन नहीं सकते अग्रदूत।

पदचिन्ह बनाने वालों की

स्वाभिमान होती है मजबूत॥

स्वाभिमान सांस हैए उल्लास है

सीधा सादा जीवन का हैं रहस्य।

मिलजाये जिन्हें यह धन

जीवन उनका हैं जन्नतमय ॥

शून्यता से महातम्य के मध्य

आने वाला एक पड़ाव है।

आत्मा को जागृत कर दे

स्वाभिमान वही भाव है॥

समाप्त